विश्लेषण

हिन्दी की पाठ्यपुस्तकें

मुकुल प्रियदर्शनी

यह राजस्थान की कक्षा 4 से 10 की हिन्दी की पुस्तकों का संक्षिप्त विश्लेषण है। विश्लेषण में कहा गया है कि हिन्दी की पुस्तकों में रोचकता का अभाव है और यह बच्चे को यथार्थ को जानने-समझने में मदद नहीं करता। अधिकांश कहानी, एकांकी, निबन्ध एवं कविता आर्य परम्परा के मूल्यों को स्थापित करती हैं और उपदेशात्मक हैं। अधिकांश विषयवस्तु बच्चों के संज्ञानात्मक स्तर के अनुरूप नहीं है। अभ्यास प्रश्न भी सोचने-समझने, अवलोकन करने, सृजन करने, कल्पना करने और बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर नहीं देते बल्कि वे स्मृति पर आधारित और वस्तुनिष्ठ किस्म के हैं।

भाषा के माध्यम हम अपने आसपास की दुनिया व जीवन से जुड़ते हैं और उस दुनिया के बारे में हमारी समझ बनती है। अपने अनुभवों और भावनाओं को भी हम भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। ऐसा हम पड़ताल, विश्लेषण, अवलोकन आदि जैसे बौद्धिक (संज्ञानात्मक) कौशलों की सहायता से करते हैं। दूसरी ओर, हमारी अस्मिता गढ़ने में भी भाषा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

क्या भाषा बच्चों के स्कूली जीवन के बारह वर्षों में भी यह भूमिका निभा पाती है ? स्कूल के संदर्भ में शिक्षण पद्धति तो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है ही, पर इस भूमिका में भाषा के विकास में पाठ्यपुस्तकों का योगदान भी कम नहीं होता। क्या राजस्थान शिक्षा बोर्ड की नई पाठ्यपुस्तकें इस काम में सहायक हो सकती हैं ?

पिछले तीन-चार वर्षों में भाषा की प्रकृति, सीखने की प्रक्रिया, बच्चों की भाषा, भाषा जानने की अवधारणा, भारतीय कक्षाओं का बहुभाषी स्वरूप, शिक्षा में भाषा की भूमिका जैसे बिंदु स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर शैक्षिक विमर्श के दायरे में आए हैं। सन 2005 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नई रूपरेखा और उस पर आधारित नया पाठ्यक्रम आया है जिसका कथ्य, मुहावरा और कलेवर पैराडाइम शिफ्ट की ओर संकेत करता है। यद्यपि सब राज्यों ने नई पाठ्यचर्या को स्वीकार नहीं किया, फिर भी विमर्श की यह नई हवा सन 2006 में प्रकाशित हुई राजस्थान की पाठ्यपुस्तकों को कितना छू पाई हैं ?

हमारे जीवन में भाषा की जिन भूमिकाओं की बात की गई है, उन्हें ध्यान में रखें तो भाषा की शिक्षाशास्त्र (पेडागॉजी) का प्रारूप तय करने और पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए निम्नांकित बिंदु ध्यान में रखे जाने की जरूरत है :

- भाषा सीखना केवल चार कौशलों तक सीमित नहीं होता। संज्ञानात्मक (बौद्धिक) कौशल का विकास भी सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।
- भाषा जानना केवल चार कौशलों तक सीमित नहीं होता। विभिन्न उद्देश्यों के लिए विविध संदर्भों में भाषा का उपयुक्त इस्तेमाल करने की क्षमता सही मायने में भाषायी या ज्ञान का परिचायक है।
- भाषा को कोई एक रूप, कोई एक शैली नहीं होती। विभिन्न कार्यक्षेत्रों और विषय क्षेत्रों की अपनी-अपनी प्रयुक्तियां (भाषायी रूप) होती हैं। इन प्रयुक्तियों

लेखक परिचय :

लेडी श्रीराम कॉलेज, दिल्ली में आरंभिक शिक्षा विभाग में भाषा विज्ञान की प्राध्यापक

सम्पर्क :

199, सहयोग अपार्टमेन्ट्स, मयूर विहार फेज-1, नई दिल्ली - 110091

को समझ पाना और आवश्यकतानुसार उनका प्रयोग कर पाना भाषायी विकास का अंग है।

- भाषा नियमबद्ध होती है, भाषा का अपना व्याकरण होता है, पर भाषा व्याकरण नहीं होती। सृजनात्मकता और सौंदर्य भाषा के अत्यंत महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं। भाषा के सौंदर्य को सराहने और उसका सृजनात्मक इस्तेमाल करने का सलीका भी भाषायी क्षमता में समाहित है।
- भाषा हमारी अस्मिता को आकार देने में निर्णायक भूमिका निभाती है। सभी शैक्षिक संदर्भों में इस अस्मिता के प्रति संवेदनशीलता सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है।
- समूची पाठ्यचर्या के संदर्भ में देखें तो भाषा केवल एक विषय ही नहीं, दूसरे विषयों और अवधारणाओं को समझने का माध्यम भी है। यही कारण है कि भाषा सीखना केवल भाषा की कक्षा तक सीमित नहीं रहता।
- चूंकि बच्चा भाषा के जरिए आसपास की दुनिया की मदद से ज्ञान की रचना करता है, इसलिए उसे जीवन और दुनिया के विविध रूपों की झलक मिलनी चाहिए ताकि उसकी समझ गहरी और विस्तृत हो सके।
- शिक्षा सशक्तिकरण का माध्यम/साधन है क्योंकि शिक्षा हमें तर्कशीलता, चिन्तनशीलता और स्वतंत्र राय बनाने की दृष्टि और हिम्मत देती है।

इन बिंदुओं के परिप्रेक्ष्य में पाठ पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण अंतर्वस्तु (कॉटेंट) और प्रश्नों के स्तर पर किया जा सकता है।

पढ़ने का मजा देना अच्छी पाठ्यपुस्तक की पहली शर्त है। उस दृष्टि से लगभग सारी किताबों में रोचकता का अभाव है। इसके पीछे तीन कारण हो सकते हैं : इन पुस्तकों में ऐसी कहानियों की कमी है जो बच्चों के वर्तमान परिवेश के इर्द-गिर्द बुनी गई हो, ऐसी रचनाएं काफी संख्या में हैं जो उपदेश और नैतिकता के बोझ तले दबी हुई हैं (कक्षा 4 में आठ और कक्षा 6 में कम से कम पांच रचनाओं को स्तर प्रत्यक्ष रूप से उपदेशात्मक है।)।

बहुत-सी रचनाओं का संज्ञानात्मक स्तर या विषयवस्तु बच्चों की आयु के अनुरूप नहीं है। (उदाहरण के लिए डॉ. कोठारी की जीवनी से चौथी कक्षा के बच्चे का जुड़ाव नहीं हो सकता। 'सदाचार' पर निबंध पांचवी के बच्चे के संज्ञानात्मक स्तर के अनुकूल नहीं है। इसी प्रकार बोझिल कविताओं के जरिए बच्चों को न तो राष्ट्र की अवधारणा समझाई जा सकती है। और न ही उनमें देशभक्ति का भाव पैदा किया जा सकता है चौथा कारण जो इन पुस्तकों की रोचकता को कम करता है, वह है इनकी बोझिल भाषा। उदाहरण के लिए, ''न्याय-नीति के पोषक हों वे, कर्मशील जनहित व्रतधारी।''(कक्षा 4, पृष्ठ 156)

''उद्यान क्षेत्र में पर्याप्त जल प्राप्त होने से यहां जलीय जीव एवं वनस्पति का भरपूर विकास हुआ है।'' (कक्षा 4, पृष्ठ 11)

''अस्तु, आत्मविश्वास का उदय जब व्यक्ति के अंतर्मन में होता है, तो वह अनथक परिश्रम कर लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्राण-पण से जुट जाता है।'' (कक्षा 6, पृष्ठ 11)

''गहरी एकाग्रता की स्थिति ..... में साधन से लक्ष्य के अंतर का लोप हो जाता है। (कक्षा 10, पृष्ठ 13)

विषयवस्तु, विधा, शैली और प्रयुक्ति की दृष्टि से ये पुस्तकें विपन्न हैं। राजस्थान और राजस्थानी की झलक वाले पाठों को छोड़ दिया जाए तो अधिकांशतः संस्कृतनिष्ठ हिंदी का प्रयोग ही पाठों में मिलता है जो कि न केवल दैनिक जीवन बल्कि साहित्य व मीडिया में उपलब्ध और प्रयुक्त अन्य कई विविध रूपों से बहुत भिन्न है। केवल एक ही किस्म की भाषा से रूबरू होना छात्राओं की भाषा को समृद्ध नहीं बना सकता। एक रूपता न केवल भाषा के स्तर पर है बल्कि संस्कृति व समाज के स्तर पर भी है।

यद्यपि कुछ पुस्तकों में ईद, ओणम, पोंगल आदि से संबंधित पाठ दिए गए हैं, पर अधिकांश निबंधों, जीवनियों, कहानियों और एकांकियों में आर्य परंपरा के चरित्रों, प्रतीकों व गौरव गाथा के प्रति आग्रह की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। कक्षा 10 की भारती भाग - 2 की अनुक्रमाणिका पर नजर दौड़ाएं तो पाएंगे कि कुल बीस पाठों में से कुछ पाठ हैं - जय है मातृभूमि, कर्ण का शौर्य, युग निर्माता अग्रसेन, सीता का वातसल्य, पश्चिमी सीमा के प्रहरी दाहर सेन, भरत, शिवाजी, राजस्थान के गौरव - संत जंभेश्वर, बाबा रामदेव, देवनारायण जी आदि। इनमें से कई पाठों में नियतिवाद, चमत्कार, ईश्वरवाद भारतीयों के यशगान आदि के कई उदाहरण मिल जाएंगे। जैसे -

''अब देवनारायण लोगों के कष्ट हरने वाले साक्षात भगवान ही बन गए .... सारंग सेठ को पुनर्जीवित करना, सूखी नदी में पानी निकालना आदि इनके चमत्कार माने जाते हैं। '' (भारती, भाग - 2, पृष्ठ 71)

''इस धरती पर एसे वीर जन्मते हैं जो सिर कट जाने पर भी लड़ते हैं। (वही, पृष्ठ 70)

देश की रक्षा और युद्ध के प्रति इन पुस्तकों में विशेष आग्रह झलकता है। आज के टकराव और संघर्ष भरे दौर में एक ओर तो शांति शिक्षा की बात की जा रही है, दूसरी ओर ये पुस्तकें 'राष्ट्रवाद' की धुन में वीभत्स और हिंसक वर्णन बच्चों के सामने प्रस्तुत करने से परहेज नहीं करतीं।

''जोरदार धमाका हुआ। वे बुरी तरह घायल हो गए। उनका दाहिना पांव लटक गया था।.... 30 जून को उनका दाहिना पांव

घुटने के नीचे से काटकर अलग कर दिया गया।'' (कक्षा 4, पृष्ठ 140, 141)

''मुहम्मद बिन कासिम को ... मरे बैल की कच्ची खाल में सिलवाकर मेरे सामने लाया जाए।'' (कक्षा 10, पृष्ठ 20)

अभ्यास प्रश्न पाठ्यपुस्तक के पाठों के संदर्भ में सोचने, समझने, अवलोकन करने, सृजन करने, कल्पना करने और अभिव्यक्ति के अनेक अवसर प्रदान करते हैं। किसी रचना को कई कोणों से, कई आयामों से देखा जा सकता है। किसी भी रचना पर एक प्रतिक्रिया किसी भी कविता का केवल एक जायज अर्थ नहीं होता। भाषा की पाठ्यपुस्तक में अच्छे अभ्यास प्रश्न इन सब बातों को मौका देते हैं। इसलिए अभ्यास प्रश्नों को विषयवस्तु, भाषा और अनुभव-विस्तार के बंधे-बंधाएं वर्गीकरण में रखने से पाठ में निहित कई संभावनाएं अछूती रह जाती हैं। पर राजस्थान की हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में ऊपर लिखी बातों की कोई अनुगूंज नहीं दिखाई देती। पाठ की स्मृति पर आधारित प्रश्न और वस्तुनिष्ठ प्रश्न रटने की परंपरा को बनाए रखन में ही सहायक होंगे। उदाहरण के लिए,- ''सदाचारी व्यक्ति में कौन-कौन से गुण होते हैं ?'' ''जीवन में सदाचार के महत्त्व पर दस वाक्य लिखो।'' (कक्षा 5, पृष्ठ 157)

''निवेदिता की स्वामी विवेकानंद से भेंट कब हुई ?

1. 1891 2. 1892

3. 1893 4. 1894 (कक्षा 10, भारती, पृष्ठ 76)

इसी प्रकार निबंधात्मक प्रश्न छात्रों को स्वतंत्र होकर सोचने और अपनी भावनाओं, विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर नहीं देते। उदाहरण के लिए,

''लेखक ने हिंदुओं की सिंचाई व्यवस्था के जो प्रमाण गिनाएं हैं, उनमें से किसी एक का वर्णन कीजिए। (कक्षा 9, भारती, पृष्ठ 12)

''पर्यावरण-संरक्षण में हमारी संस्कृति किस प्रकार सहायता कर सकती है ? (कक्षा 8, पृष्ठ 85)

''सुंदर अक्षरों में लिखो - प्रकृति हमेशा न्याय करती है।'' (कक्षा 5, पृष्ठ 76)

कुल मिलाकर हिंदी की जो पाठ्यपुस्तकें इस समीक्षा के दायरे में आई हैं, वे शिक्षाशास्त्र की दृष्टि से तो अत्यंत दोषपूर्ण हैं ही, साथ ही साथ सामाजिक सांस्कृतिक-राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में भी ये काफी आपत्तिजनक हैं। इनमें इतिहास और मिथक में अंतर नहीं किया गया है। श्रमप्रधान समाज के मूल्यों की अनदेखी की गई है। बहुलतावादी समाज की झलक नहीं है। इन पुस्तकों का घोषित-अघोषित उद्देश्य एक देश, एक भाषा, एक परंपरा और एक धर्म लगता है। छात्रा-छात्राओं की दृष्टि से देखा जाए ता ये पुस्तकें रेगिस्तान के बियाबान, सपाटता और शुष्कता का शैक्षिक प्रतीक हैं। ◆

कविता

बाग के पौधे

जिनकी हर बढ़त और फैलाव पर

नजर रखी जाती है

बढ़ने की उम्र में

काट-छांट दिया जाता है

अगर बढ़ जाते हैं कहीं से 'फालतू'

यूं ही छटते है उनके 'पत्ते',

'डालियां' निर्ममता से

और तयशुदा दिशा-दशा में बढा़ने को

दी जाती है तयशुदा खाद

तयशुदा पानी

तयशुदा धूप

बस चले तो हवा भी

- दिलिप

30, एन.ई.बी. सुभाष नगर

अलवर, राजस्थान।